भारत की राष्ट्रपति

श्रीमती द्रौपदी मुर्मु

का

भारत के उच्च शक्षण संस्थानों से जुड़े इस अत्यंत महत्वपूर्ण [illegible] देने वाले राष्ट्रपति सचवालय के सभी लोगों को बधाई देती हूं।

इस [illegible] के लए चुने गए वषयों पर हुए वचार-मन्थन का सारांश सुनकर मैं कह सकती हूं क उच्च-शक्षा से जुड़े अत्यंत महत्वपूर्ण आयामों पर उपयोगी निष्कर्ष निकले हैं। इस समापन सत्र में संक्षप्त प्रस्तुतियां करने वाले वशेषज्ञों तथा वस्तार से गहन वमर्श करने वाले उनकी टीमों के सभी सदस्यों की मैं सराहना करती हूं।

पाठ्यक्रमों की [illegible] राष्ट्रीय शक्षा नीति 2020 के तहत लागू कए गए ऐतिहासक बदलाव हैं। मुझे वश्वास है क वद्यार्थयों की सुवधा [illegible] को आप सब प्रभावी बनाएंगे। इससे वद्यार्थयों को बहुमुखी प्रतिभा वकसत करने तथा अपनी पसंद के पाठ्यक्रमों में अध्ययन करने के अवसर प्राप्त होंगे।

इक्कीसवीं सदी की पहली चौथाई के अंत में हम स्वाधीन भारत के अमृत काल से गुजर रहे हैं। इस सदी के पूर्वार्ध के सम्पन्न होने के पहले ही भारत को वकसत देश बनाने का हमारा राष्ट्रीय लक्ष्य है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लए शक्षण संस्थानों से जुड़े सभी लोगों को तथा वद्यार्थयों को [illegible] [illegible]के आधार पर आगे बढ़ना होगा। यह प्रयास होना चाहिए क भारत शक्षण संस्थानों से हमारे देश की उच्च-शक्षा व्यवस्था का जुड़ाव बढ़े। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] के मजबूत होने से हमारे युवा वद्यार्थी इक्कीसवीं सदी के वश्व में अपनी और अधक प्रभावी पहचान बनाएंगे। देश के उच्च शक्षण संस्थानों में वश्व-स्तरीय शक्षा मलने से वदेश जाकर पढ़ने की प्रवृत्त में कमी आएगी। देश की युवा प्रतिभा का राष्ट्र-निर्माण में बेहतर उपयोग हो सकेगा। हमारा प्रयास होना चाहिए क वकसत देशों से वद्यार्थी और शक्षक भारत आकर शक्षा और अनुसंधान से जुड़ें।

हमारा देश वश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थ-व्यवस्था बनने की ओर अग्रसर की पहचान है। अनुसंधान और नवाचार पर आधारित आत्म-निर्भरता हमारे उद्यमों और अर्थ-व्यवस्था को मजबूत बनाएगी। ऐसे अनुसंधान और नवाचार को हर संभव सहायता मलनी चाहिए। वकसत अर्थ-व्यवस्थाओं में [illegible] [illegible] मजबूत दिखाई देता है। उद्योग जगत और उच्च शक्षण व्यवस्था और समाज की आवश्यकताओं से जुड़े रहते हैं। आप सबको पारस्परिक हित में औद्योगक संस्थानों के वरिष्ठ लोगों से निरंतर वचार-वमर्श करने के संस्थागत प्रयास करने चाहिए। इससे शोधकार्य करने वाले शक्षकों और

[illegible] तथा [illegible] पर आधारित [illegible] को प्रोत्साहित करने के भी दिए गए हैं। ऐसे सुझावों को कार्यरूप देने से हमारी [illegible] [illegible] आत्म-निर्भरता और मजबूत होगी।

प्राप्त करने के लए अनेक आयामों पर कार्य करना होगा। शक्षा प्रणाली [illegible] हो और साथ ही वद्यार्थयों की वशेष प्रतिभाओं और होते रहने चाहिए। वद्यार्थयों को सक्षम बनाना ही ऐसे बदलावों का उद्देश्य होना चाहिए।

शक्षण संस्थानों की गुणवत्ता का आकलन एक जटिल परंतु अनिवार्य प्रक्रया के अनुरूप वकसत करना एक निरंतर चलने वाली प्रक्रया है। कसी भी आकलन पद्धति की सफलता उसकी स्वीकार्यता और वश्वसनीयता में निहित होती है। आकलन-कर्ताओं का निष्पक्ष और आदरणीय होना भी आकलन पद्धति की वश्वसनीयता की अनिवार्य शर्त है। इन मूलभूत आयामों के मजबूत रहने से ही देश-वदेश में शक्षण संस्थानों के आकलन को समुचत महत्व दिया जाएगा।

उच्च शक्षण संस्थानों को वेग से बहने वाली स्वच्छ नदियों की तरह अपने प्रवाह क्षेत्र को उपजाऊ बनाना चाहिए। इस प्रवाह में संस्थानों की परंपरा और भवष्य दोनों समाहित हैं। कल सायं-काल मुझे कुछ ऐसे पूर्व वद्यार्थयों से मलने का अवसर प्राप्त हुआ जिन्होंने अपने शक्षण संस्थानों को आर्थक महत्वपूर्ण योगदान दिया है तथा देश के वकास के प्रति सक्रयता बनाए रखी उज्ज्वल भवष्य की ओर बढ़ने के मार्गों का निर्माण करना चाहिए।

ववेक और क्षमता का निर्माण होता है। हमारे देश के युवा वद्यार्थयों का समग्र निर्माण ही आप सबके राष्ट्र-प्रेम और समाज-सेवा का प्रमाण होगा। मुझे वश्वास है क आप सब उच्च शक्षा के उदात्त आदर्शों को अवश्य प्राप्त करेंगे तथा भारत माता की युवा संततियों को स्वर्णम भवष्य का उपहार देंगे। इसी वश्वास के साथ मैं अपनी वाणी को वराम देती हूं।

धन्यवाद!

जय हिन्द!

जय भारत!